ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 11 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 199 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 09 जनवरी, 2023 से रविवार 15 जनवरी, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2079 | सृष्टि सम्वत् 1960853123 | दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक, वेदोद्धारक, युग प्रवर्तक, विश्व की महान विभूति

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म के 200 वें वर्ष पर

विश्व भर में होने वाले आयोजनों का भव्य शुभारंभ

दिनांक:- 12 फरवरी 2023, रविवार | **समय:- प्रात: 09:00 बजे से**

स्थान:- इन्दिरा गांधी इंडोर स्टेडियम, आई. पी. स्टेट, नई दिल्ली-110002

1824

बंधुओ, जैसा कि यह सर्व विदित ही है कि ऋषि मुनियों की भूमि भारत में महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 को टंकारा गुजरात की धरती पर उस समय हुआ, जब चारों तरफ अज्ञान, अविद्या, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास का बोलबाला था। 19वीं सदी के महामानव महर्षि ने तप, त्याग और कठिन साधना से मानव कल्याण मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने ईश्वर की अमृतवाणी वेदज्ञान के अनुसार मानवमात्र को चलने की प्रेरणा देते हुए आर्य समाज की स्थापना की। आज जब उनकी 200 वीं जन्म जयंती का शुभारंभ 12 फरवरी 2023 को हो रहा है, इस अमृत बेला पर

2024 तक वर्ष भर संपूर्ण विश्व में विशाल आयोजनों का शुभारंभ हम सब आर्यजनों की समस्त उपलब्धियों की महान प्रेरणा का पर्व है।

2024

सादर निवेदन

इस महान ऐतिहासिक अवसर पर भारत और विश्व की समस्त आर्य समाजें, आर्य सभाएं, आर्य परिवार, आर्य शिक्षण संस्थान, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, आर्य अनाथालय, वानप्रस्थाश्रम, संन्यास आश्रमों सहित आर्यवीर/वीरांगना दल आदि संपूर्ण आर्य जगत सादर आमंत्रित है। आईए, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200 वें जन्म वर्ष के विश्व भर में होने वाले आयोजनों के भव्य शुभारंभ के साक्षी बनें, सभी आर्यजन इष्ट मित्रों, सपपरिवार, स्त्री, पुरुष, बच्चे, बुजुर्ग, युवा सब सम्मिलित होकर आर्य समाज के संगठन की शक्ति का परिचय देवें।

महान दूरदर्शी और समाज सुधारक थे महर्षि दयानंद सरस्वती -प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के योगदान पर शोध करने का देश भर के शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थानों का किया आह्वान

अभी पिछले दिनों नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय के वार्षिक समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के योगदान को स्मरण करते हुए अपने उद्बोधन में कहा की 1875 में आर्य समाज के संस्थापक और आधुनिक भारत के सबसे प्रभावशाली सामाजिक और सांस्कृतिक सख्सियतों में से एक स्वामी दयानंद सरस्वती की 200 वीं जन्म जयंती 2024 में आ रही है, प्रधानमंत्री जी ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी महान दूरदर्शी और समाज सुधारक थे। उनके योगदान के साथ-साथ 2025 में आर्य समाज अपने अस्तित्व के 150 साल पूरे करने जा रहा है, महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के बारे में अच्छी तरह से शोध करके ज्ञान का सृजन करने के लिए देशभर के शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थानों का मैं आह्वान करता हूं।

प्रधानमंत्री जी द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के योगदान

- शेष पृष्ठ 7 पर

कोलकाता में महर्षि दयानंद के आगमन के 150 वर्ष पूरे होने पर भव्य आर्य महासम्मेलन संपन्न

बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रों में वैदिक साहित्य के निशुल्क वितरण से संभव होगा आर्य समाज का प्रचार -विनय आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की बंगाल यात्रा के 150 वर्ष पूर्ण होने पर आर्य समाज कोलकाता द्वारा आर्य महासम्मेलन का आयोजन 30 दिसंबर से 1 जनवरी 2023 तक अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ, भजन और उपदेश के कार्यक्रम 3 दिनों तक लगातार सफलता पूर्वक चलते रहे। इस अवसर पर आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी, विद्वान और आर्य नेता उपस्थित रहे, गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, सिक्किम के राज्यपाल महामहिम गंगा प्रसाद जी, स्वामी रामदेव जी जी, स्वामी सुमेधानंद जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, प्रोफेसर ज्वलंत कुमार जी, डॉ वेद पाल जी, आचार्य सुदर्शन देव जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेश चंद्र आर्य जी और अनेक अन्य विद्वान उपस्थित थे। स्वामी रामदेव जी ने अपने उद्बोधन में कहा महर्षि दयानंद सरस्वती जी को जो सम्मान देश और दुनिया में मिलना चाहिए था वह नहीं मिल पाया।

- शेष पृष्ठ 7 पर

वेदवाणी-संस्कृत

हे मनुष्य

वेद-स्वाध्याय

प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्राऽऽविद्वाँ आह विदुषे करांसि।
यथायथा वृष्ण्यानि स्वगूर्तापांसि राजन् नर्य्याविवेषी:॥

-ऋक्. 4 । 19 । 10

ऋषि:-वामदेव:॥ देवता-इन्द्र:॥ छन्द:-पङ्क्ति:॥

शब्दार्थ- **राजन्**=हे सच्चे राजन्! **यथायथा**=ज्यों-ज्यों तू **वृष्ण्यानि**=बलकारक **स्वगूर्ता**=स्वयं अन्दर से निकले **नर्या**=मनुष्यों के हितकारी **अपांसि**=कर्मों को **अविवेषी:**=व्याप्त करता है, त्यों-त्यों **विप्र**=हे सर्वज्ञानमय! **ते**=तेरे **पूर्वाणि करणानि**=सनातन कर्मों, कर्म-साधनों को **आविद्वान्**=प्रत्यक्ष समझने वाला ज्ञानी **करांसि**=कार्यों को, कर्त्तव्यकर्मों को **विदुषे**=समझने वाले ज्ञानी के लिए **प्र आह**=अधिकाधिक प्रकर्ष से कह सकता है, कहता है, कथा-चर्चा करता है।

विनय- हे इन्द्र! तुम हमारे कर्मों में बसते हो, परन्तु तुम्हारा निवास हमारे उन्हीं श्रेष्ठ कर्मों में होता है जो स्वयं हमारे अन्दर से निकले 'स्वगूर्त' होते हैं, जो सब नरों के हितकारी 'नर्य' होते हैं और जो बलकारक (शक्ति बढ़ाने वाले) 'वृष्ण्य' कर्म होते हैं। यों कहना चाहिए कि तुम्हारे निवास के कारण ही हमारे कर्मों में यह श्रेष्ठता और शक्ति उत्पन्न होती है। धन्य हैं वे पुरुष जिनके कर्मों में तुम इस प्रकार व्यापते हो, आविष्ट होते हो। हे राजन्! ज्यों-ज्यों तुम किसी मनुष्य के कर्मों में इस प्रकार विराजने लगते हो, त्यों-त्यों उसका कर्म-सामर्थ्य बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों उसके कर्म का प्रवाह अधिक-से-अधिक क्षेत्र को घेरता जाता है। अन्त में उसका मानसिक कर्म, उसका ज्ञान अत्यन्त व्यापक और तेजस्वी हो जाता है, उसके ज्ञान-कर्म में भी तुम्हारा निवास हो जाता है, अत: वही मनुष्य होता है जो ठीक-ठीक कर्त्तव्य-कर्मों को जान सकता है और दूसरों को बतला सकता है, क्योंकि तब वह हे विप्र! तुम्हारे पूर्व कारणों का भी पूरा जानने वाला 'आविद्वान्' हो जाता है। तुम्हारा जो इस संसार में सनातन कर्म चल रहा है और वह जिन सनातन शुद्ध साधनों, करणों से चल रहा है उसे वह साक्षात् जानने लगता है, अत: वही बता सकता है कि अमुक समय में कर्त्तव्य कर्म क्या है, वही दूसरों का पथप्रदर्शक हो सकता है, वही सच्चे ज्ञान का उपदेष्टा हो सकता है, वही है जो सच्चे अर्थों में भविष्यवाणी कर सकता है, तेरे सनातन करणों को जानने के कारण बता सकता है कि तेरी सृष्टि में अब तेरा क्या कर्म होने वाला है। नि:सन्देह ये बातें आम लोगों से करने की नहीं होती। 'आविद्वान्' की इन बातों को विद्वान् ही समझ सकता है। विद्वान् पुरुष ही परस्पर, हे सर्वज्ञ! तेरे इन करणों व करणीयों की कथा-चर्चा किया करते हैं, पर ज्ञान की यह उच्च अवस्था उन्हीं पुरुषों को प्राप्त होती हैं जिनके कर्मों में तुम्हारा निवास हो जाता है। जितना-जितना किसी के कर्म तुमसे व्याप्त होने लगते हैं उतना-उतना ही उसमें सच्चा ज्ञान प्रकट होने लगता है। इसलिए, हे मनुष्यो! देखो, ज्ञान के साथ कर्म के इस सम्बन्ध को देखो, अपने कर्मों को बिना विशुद्ध किये-कोई मनुष्य ज्ञानोपदेष्टा नहीं बन सकता। अपने कर्मों में प्रभु को बसाये बिना कोई मनुष्य प्रभु की बात करने का अधिकारी नहीं हो सकता।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

तेलंगाना के स्वास्थ्य निदेशक की ईसाईयत के झूठे प्रचार की अफवाह का पर्दाफास

पादरियों ने ऐसे भगाया कोरोना

> ***"भारत में ईसाइयत का व्यापार सबसे बेहतरीन चल रहा है। जिस ईसाइयत को यूरोप और अमेरिका साइड कर रहा है, आज उसे भारत में बेचा जा रहा है। बिलकुल ऐसे जैसे पुरानी गाड़ी या कपडे हों! इसके लिए चंगाई सभा लगाई जाती है। पिछले दिनों जब पोप की एक तश्वीर वायरल हुई उन्हें व्हीलचेयर से ले जाया जा रहा था। तब झारखंड के अनेक शहरों में बैनर लगे थे जिनमें लिखा था प्रभु यीशु के नाम पर अंधे देखते हैं, बहरे सुनते हैं, गूंगे बोलते हैं और मुर्दे भी जी उठते हैं। ये बैनर दुमका में हो रही चंगाई सभा के लिए लगाए गए थे। इसमें लोगों को बुलाने के लिए ही इस तरह के बैनर लगाए गए थे इन बैनरों को देखकर लोग कह रहे थे कि यदि चंगाई सभा में भाग लेने मात्र से किसी की बीमारी ठीक हो सकती है, तो इसकी सबसे अधिक जरूरत तो खुद पोप को है। क्योंकि पोप घुटनों के दर्द से परेशान हैं और यही वजह है कि वे व्हीलचेयर की मदद से चल फिर रहे हैं।"***

पिछले दिनों तेलंगाना के हेल्थ डायरेक्टर जी श्रीनिवास राव ने कहा था कि भारत के लोग जीसस के चलते ही कोरोना महामारी के प्रकोप से बच पाए हैं। जी श्रीनिवास के अनुसार ईसा मसीह ने ही भारत में कोरोना वायरस को नियंत्रित किया है, वरना भारत तो तबाह हो जाता। यानि जीसस ने यूरोप, अमेरिका और वेटिकन सिटी छोड़कर जहाँ उनके सबसे अधिक मानने वाले हैं का सारा ध्यान अपने अनुयायियों को छोड़कर भारत को बचा रहा था, जो चार किलो चावल में ईसाई बन जाते हैं। हालाँकि इनके बयान के बाद लोगों को गुस्सा आया और पूछा कि वह हेल्थ डायरेक्टर क्यों हैं? इसे इस्तीफा देकर जाना चाहिए और जीसस को रक्षा करने दें। हालाँकि जीसस की बीमारी से पीड़ित तेलंगाना के स्वास्थ निदेशक से कुछ सवाल जरूर हैं, जिन्हें सुनकर वो या तो उत्तर दे या फिर अपने पद से इस्तीफा। और जाकर चर्च की सीढियों पर पोछा लगाये।

दरअसल कोविड-19 कोरोना आया था साल 2020 में एक अंग्रेजी वेबसाइट है वेटिकन न्यूज इसी वेटिकन न्यूज की 17 मई 2021 की एक रिपोर्ट थी कोरोना को लेकर, इस वेबसाइट में लिखा था कि कोरोना के चलते भारतीय चर्च ने 160 पादरियों को खो दिया। ये आंकड़े 10 अप्रैल से 17 मई 2021 के बीच के हैं। रिपोर्ट अपनी चिंता जाहिर करते हुए लिखती है कि ये आंकड़े बहुत खतरनाक हैं, क्योंकि हमारे पास केवल 30,000 कैथोलिक पुजारी हैं और यदि चार दैनिक मर जाते हैं, तो यह हम सभी के लिए बहुत चिंता का विषय है। इनमें केवल पादरी ही नहीं कुछ बड़े विशप भी थे। जैसे पांडिचेरी-कुडडालोर आर्कबिशप एंटनी आनंदरायर, झाबुआ के बिशप बेसिल भूरिया, सीरो-मालाबार संस्कार के बिशप जोसफे पादरी नीलांकविल भी शामिल थे। रिपोर्ट में ये भी बताया गया था कि ज्यादातर वो पादरी और नन मरे हैं जो गाँवो में जाकर धर्मांतरण का कार्य कर रहे थे। इसके अलावा केरल के मुन्नार में उसी दौरान एक वार्षिक कार्यक्रम में शामिल होने वाले चर्च ऑफ साउथ इंडिया के 100 से ज्यादा पादरी कोरोना पॉजिटिव पाए गए थे और दो पादरियों की मौत भी हो गई थी।

अब ऐसे में सवाल ये है कि जीसस बचा किसे रहा थे! उसके पादरी तड़प-तड़पकर मर रहे थे, उसी दौरान पोप भी हॉस्पिटल में कोरोना के चलते एडमिट हो गया था। इसके अलावा पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्र सिएरा लियोन में एक यूनाइटेड मेथोडिस्ट चर्च के बिशप की मौत हुई। ब्रुकलिन में एक 49 वर्षीय पादरी कोरोनो वायरस गया न्यू सेंट पॉल टैबरनेकल चर्च ऑफ गॉड के वरिष्ठ पादरी बिशप फिलिप ए ब्रूक्स की कोविड से मौत हुई। सबसे बड़ा धोखा तो जीसस ने अपने घर रोम या इटली के किया यहाँ तो करीब 100 पादरियों और सैंकड़ो ननों की मौत हुई।

दरअसल भारत में ईसाइयत का व्यापार सबसे बेहतरीन चल रहा है। जिस ईसाइयत को यूरोप और अमेरिका साइड कर रहा है, आज उसे भारत में बेचा जा रहा है। बिलकुल ऐसे जैसे पुरानी गाड़ी या कपडे हों! इसके लिए चंगाई सभा लगाई जाती है। पिछले दिनों जब पोप की एक तश्वीर वायरल हुई उन्हें व्हीलचेयर से ले जाया जा रहा था। तब झारखंड के अनेक शहरों में बैनर लगे थे जिनमें लिखा था प्रभु यीशु के नाम पर अंधे देखते हैं, बहरे सुनते हैं, गूंगे बोलते हैं और मुर्दे भी जी उठते हैं। ये बैनर दुमका में हो रही चंगाई सभा के लिए लगाए गए थे। इसमें लोगों को बुलाने के लिए ही इस तरह के बैनर लगाए गए थे इन बैनरों को देखकर लोग कह रहे थे कि यदि चंगाई सभा में भाग लेने मात्र से किसी की बीमारी ठीक हो सकती है, तो इसकी सबसे अधिक जरूरत तो खुद पोप को है। क्योंकि पोप घुटनों के दर्द से परेशान हैं और यही वजह है कि वे व्हीलचेयर की मदद से चल फिर रहे हैं।

असल अतीत देखा जाये तो इस खेल की शुरुआत सन 1997 में छत्तीसगढ़ के रायपुर से शुरू हुई थी। वहां एक ऐसी ही एक चंगाई सभा के बोर्ड शहर व ग्रामीण अंचल में लगने लगे थे। रिक्शा, ऑटो, जीप, कारों से धुआधार प्रचार होने लगा था कि शहर के पास मेमोरियल मैदान में 12 से 16 नवम्बर तक विशेष धार्मिक सभा होगी। जिसमें नेत्रहीन को दिखाई देने लगेगा, शरीर से विकलांग चलने लगेंगे, असाध्य रोगी कुलाचे भरते हुए जायेंगे। हर एक रोग को ठीक करने का यहाँ दावा किया गया था। अब जो लोग यहाँ से निराश लौटे बाद में उन्हें कहा गया उन्हें पहले यीशु पर विश्वास करना होगा। वहीं दूसरी और कथित मरीजों

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य संदेश

मानसिक रोगों से रहें सावधान

स्वास्थ्य का 'अर्थ मात्र रोग की अनुपस्थिति' अथवा 'शारीरिक स्वस्थता' नहीं होता। इसे पूर्णरूपेण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य के रूप में परिभाषित करना अधिक उचित होगा। स्वास्थ्य शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिकता की संपूर्ण स्थिति है। स्वास्थ्य की देखभाल हेतु मानसिक स्वस्थता अत्यंत आवश्यक है। मानसिक स्वास्थ्य का आशय भावनात्मक मानसिक तथा सामाजिक संपन्नता से लिया जाता है। यह मनुष्य के सोचने, समझने, महसूस करने और कार्य करने की क्षमता को प्रभावित करता है। मानसिक विकार में अवसाद दुनिया भर में सबसे बड़ी समस्या है। यह कई सामाजिक समस्याओं जैसे- बेरोजगारी, गरीबी और नशाखोरी आदि को जन्म देती है।

मानसिक रोगों के विभिन्न प्रकारों के तहत अल्जाइमर रोग, डिमेंशिया, चिंता, ऑटिज्म, डिस्लेक्सिया, डिप्रेशन, नशे की लत, कमजोर याददाश्त, भूलने की बीमारी एवं भ्रम आदि आते हैं। इसके लक्षण भावनाओं, विचारों और व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। उदास महसूस करना, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में कमी, दोस्तों और अन्य गतिविधियों से अलग होना, थकान एवं निद्रा की समस्या आदि इसके लक्षणों के अंतर्गत आते हैं।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति

भारत में अगर मानसिक स्वास्थ्य संबंधी आँकड़ों की बात की जाए तो विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत की 7.5 फीसदी आबादी किसी-न-किसी मानसिक समस्या से जूझ रही है। विश्व में मानसिक और न्यूरोलॉजिकल बीमारियों की समस्या से जूझ रहे लोगों में भारत का करीब 15 प्रतिशत हिस्सा शामिल है। साथ ही भारत में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को फंड का आवंटन भी अन्य बीमारियों की तुलना में बहुत कम है। भारत में हर दस लाख आबादी पर केवल तीन मनोचिकित्सक हैं। कॉमनवेल्थ देशों के नियम के मुताबिक हर एक लाख की आबादी पर कम-से-कम 5-6 मनोचिकित्सक होने चाहिये। WHO के अनुमान के अनुसार, वर्ष 2020 तक भारत की लगभग 20 प्रतिशत आबादी मानसिक रोगों से पीड़ित हो जाएगी मानसिक रोगियों की इतनी बड़ी संख्या के बावजूद अब तक भारत में इसे एक रोग के रूप में पहचान नहीं मिल पाई है। इसे यहाँ आज भी काल्पनिक माना जाता है और मानसिक स्वास्थ्य की पूर्णत: उपेक्षा की जाती है। लेकिन सच्चाई यह है कि शारीरिक रोगों की तरह मानसिक रोग भी हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार आने वाले समय में दुनिया भर में अवसाद दूसरी सबसे बड़ी समस्या होगी।

> ***"आँकड़ों के अनुसार, भारत में 15-29 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों की मृत्यु का सबसे बड़ा कारण आत्महत्या है। वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार, भारत में तकरीबन 1.5 मिलियन लोगों में बौद्धिक अक्षमता और तकरीबन 7,22,826 लोगों में मनोसामाजिक विकलांगता मौजूद है। इसके बावजूद भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर किया जाने वाला व्यय कुल सरकारी स्वास्थ्य व्यय का मात्र 1.3 प्रतिशत है। 2011 की जनगणना के अनुसार मानसिक रोगों से ग्रस्त करीब 78.62 फीसदी लोग बेरोजगार हैं। भारत में मानसिक रूप से बीमार लोगों के पास या तो देखभाल की आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं और यदि सुविधाएँ हैं भी तो उनकी गुणवत्ता अच्छी नहीं है।"***

आँकड़ों के अनुसार, भारत में 15-29 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों की मृत्यु का सबसे बड़ा कारण आत्महत्या है। वर्ष 2011 की जनगण ना के आँकड़ों के अनुसार, भारत में तकरीबन 1.5 मिलियन लोगों में बौद्धिक अक्षमता और तकरीबन 7,22,826 लोगों में मनोसामाजिक विकलांगता मौजूद है। इसके बावजूद भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर किया जाने वाला व्यय कुल सरकारी स्वास्थ्य व्यय का मात्र 1.3 प्रतिशत है। 2011 की जनगणना के अनुसार मानसिक रोगों से ग्रस्त करीब 78.62 फीसदी लोग बेरोजगार हैं। भारत में मानसिक रूप से बीमार लोगों के पास या तो देखभाल की आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं और यदि सुविधाएँ हैं भी तो उनकी गुणवत्ता अच्छी नहीं है।

वैश्विक स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति-

विश्व स्तर पर अगर मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा करें तो हम पाते हैं कि मानसिक विकार विश्व में रुग्ण-स्वास्थ्य और विकलांगता उत्पन्न करने वाला प्रमुख कारण है। WHO के अनुसार, 450 मिलियन लोग वैश्विक स्तर पर मानसिक विकार से पीड़ित हैं। विश्व में चार व्यक्तियों में से एक व्यक्ति जीवन के किसी मोड़ पर मानसिक विकार या तंत्रिका संबंधी विकारों से प्रभावित है। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित 10-19 वर्ष की उम्र के व्यक्तियों की वैश्विक रोगभार में 16% की हिस्सेदारी है। 'विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस' विश्व में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और मानसिक स्वास्थ्य के सहयोगात्मक प्रयासों को संगठित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 10 अक्तूबर को मनाया जाता है। विश्व मानसिक स्वास्थ्य संघ ने विश्व के लोगों के मानसिक स्वास्थ्य देखभाल को यथार्थवादी बनाने के लिये वर्ष 1992 में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस की स्थापना की थी।

-क्रमशः अगले अंक में...

बाल बोध

कविता के रूप में -मकर संक्रान्ति का महत्व

आर्यों का यह मकर संक्रान्ति पावन पर्व है।
पर्वों का यह तो मूल है, हमको तो इस पर गर्व है।।
सूर्य जब मकर राशि की तरफ बढ़ता सुनों।
ग्रीष्म का प्रभाव भारत वर्ष पर चढ़ता सुनों।।
आराम पाते हैं सफल जन, मंद पड़ता शीत है।
होते हैं हर्षित सभी, संसार की यह रीत है।।
राम, कृष्ण, ऋषिवृन्द ने, इस पर्व को माना सुनों।
पाला सनातन धर्म को, था सत्य को जाना सुनों।।
इस दिन घरों में यज्ञ पावन, आर्यजन करते थे सब।
वैदिक कथा कर मानसिक, पीडा सकल हरते थे सब।।
उपदेश पावन वेद के, देते थे ऋषि-मुनि संतजन।
बढ़ती थी तब ज्ञान गंगा, हो जाता था शुद्ध मन।।
हृदय थे, पावन सभी के, प्यारी प्रजा भी सुखी।
स्वर्ग का वातावरण था, कोई भी ना था दुखी।।
शासक थे सब धर्मात्मा, वेदों के विद्वान थे।
वीर, व्रतधारी, सदाचारी महा बलवान थे।।
विश्व हित की योजना, इस दिन बनाते थे सुनों।
न्यायकारी थे प्रजा का, दुख मिटाते थे सुनों।।
निर्बलों-विफलों का सदा, हर भांति रखते ध्यान थे।
निर्धनों को हर्ष से, बलवान देते दान थे।।
हम गुरु थे विश्व के, इसका सुखद परिणाम था।
भारती सब देवता थे, हर तरह आराम था।।
चोर, डाकू अरू शराबी, तब जगत में थे नहीं।
व्यभिचारिणी नारियां, इस देश में न थीं कहीं।।
यदि महत्व इस त्यौहार का, संसार सारा जान ले।
गौतम, कपिल, दयानन्द की, यदि सीख दुनियां मान ले।।
सद्भावना आगे दिलों में, विश्व के कल्याण की।
सब ईश विशवासी बने, बातें तजे अभिमान की।।
वेद के अनुकूल जीवन, यह हमारा हो प्रभो।
सबके जीवन का सहारा, तू ही प्यारा हो प्रभो।।
संसार के नर-नारियों, सब वेद के पथ पर चलो।
काम नेकी के करो सब, हर तरह फूलो-फलो।।
स्वर्ग बन जाएगी दुनिया, यह रखो विश्वास तुम।
''नन्दलाल'' दुरभावनाओं का करो अब नाश तुम।।

-पण्डित नन्दलाल निर्भय

दिल्ली सभा द्वारा सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा अभियान हुआ तेज

झुग्गी-झोपड़ियों में एम्बुलेंस सेवा के माध्यम से लगाए जा रहे हैं नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

अशोका बिन्दुसार ईस्ट ऑफ कैलास एवं मध्य दिल्ली के प्रिंसेस पार्क में स्वास्थ्य जांच शिविर के दौरान सैकड़ो रोगियों ने करायी नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की नियंत्रक शिरोमणि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा राष्ट्र सेवा एवं मानव निर्माण के सैकड़ों प्रकल्प गतिशील हैं। सभा द्वारा संचालित सेवा समर्पण के इस महान अभियान में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा से सैंकड़ों निर्धन लोग लाभान्वित हो रहे हैं। इस महत्वपूर्ण योजना का उद्देश्य है कि दिल्ली की उन समस्त सेवा बस्तियों में जहां निर्धन, मजदूर लोग रहते हैं, जहां पर छोटे छोटे झुग्गी झोपड़ी हैं, साफ सफाई भी नाम मात्र के लिए ही है, राजनीतक पार्टियां जहां केवल चुनाव के समय पर वोट मांगने के लिए ही जाती हैं, बाकी समय उन भोले भाले लोगों को यदा कदा भीड़ के रूप में ही वे प्रयोग करते हैं, उनके सुख, दु:ख, पीड़ा, संताप से उनका कोई सरोकार नहीं होता। ऐसे गरीब दिहाड़ी मजदूर लोगों के कल्याण के आर्य समाज द्वारा सभा की एंबुलेंस और पूरी स्वास्थ्य जागरूकता सेवा की टीम दिल्ली में जगह जगह पर झुग्गी बस्तियों में निशुल्क स्वास्थ्य जांच कर रही है। जिसमें सुगर, बी.पी., हीमोग्लोबिन, आक्सीजन, पल्स, वजन, लम्बाई की जांच कर तुरंत रिपोर्ट दी जाती है। अभी पिछले दिनों अशोका बिन्दुसार ईस्ट ऑफ कैलास और मध्य दिल्ली के प्रिंसेस पार्क में नि:शुल्क जांच शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें दोनों स्थानों पर सैकड़ो रोगियों ने अपने विभिन्न स्वास्थ्य सम्बन्धी जांच करायी और आर्य समाज के इस सेवा कार्य के लिए आभार व्यक्त किया। इन जांच शिविरों में हर आयु वर्ग के स्त्री, पुरुष और बच्चे लाभार्थी बने।

वस्तुत: आधुनिक परिवेश में उत्तम स्वास्थ्य अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। उस पर भी भारत की राजधानी दिल्ली का प्रदूषित वातावरण, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले निर्धन मजदूरों जो रोज कमाते और खाते हैं, जहां हवा, पानी, भोजन आदि सब बहुत कम स्वच्छ होता है। ऐसे में वहां पर बीमार लोग अपनी दिहाड़ी मजदूरी से छुट्टी न मिलने के कारण बिना स्वास्थ्य परीक्षण के लक्षणों के आधार पर दवाई खाकर ज्यादा बीमार हो जाते हैं। इन सभी समस्याओं और पीड़ाओं को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली की समस्त सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा अभिमान के माध्यम से सभा की एम्बुलेंस और स्वास्थ्य जागरूकता की पूरी टीम जगह जगह स्वास्थ्य परीक्षण का कार्य कर रही है। जिससे निर्धन रोगियों की बीमारी की सही जांच और उपचार संभव हो सके।

कोटा राजस्थान में यज्ञ प्रचार कार्यक्रम संपन्न

8 जनवरी। कोटा राजस्थान में आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के मिडिया प्रभारी आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के अनुसार आज आर्य समाज द्वारा हमराह कार्यक्रम में संभागीय प्रधान अर्जुन देव चढ्डा के दिशानिर्देशन एवं सानिध्य मे आर्य पुरोहित भेरूलाल शर्मा के पुरोहित्य मे यज्ञ किया गया। मुख्य यजमान गुमान सिंह कुशवाह थे, यज्ञ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सरदार हरमीत सिंह आनन्द एवं अध्यक्षता अर्जुन देव चढ्डा ने की। आर्य समाज के सम्भागीय महामंत्री अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि आज कार्यक्रम मे आर्य समाज के प्रतिनिधि राधावल्लभ राठौर, गुमान सिंह कुशवाह, प्रमोद कुमार गुप्ता, राजेन्द्र आर्य मुनि व अन्य 35 महिला-पुरुषों ने विशेष रूप से औषधीय युक्त हवन सामग्री से मन्त्रोचार करते हुए होता है। सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, यज्ञ की महिमा का गुणगान किया और प्रार्थना करते हुए आहुतियां डाली। शान्तिपाठ के साथ यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

यज्ञ प्रचार के एक अन्य कार्यक्रम में आर्य समाज द्वारा यज्ञ से होने वाले लाभों को प्रदर्शित करने वाले पोस्टरों का विमोचन किया गया। इस अवसर पर आर्य नेता व आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा मुख्य अतिथि ने यज्ञ से होने वाले लाभ को बताने वाले पोस्टर का विमोचन किया गया। विमोचन के इस अवसर पर चड्ढा जी ने कहा कि यज्ञ मानव का श्रेष्ठतम कार्य है, जिससे विभिन्न प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

दिल्ली एन.सी.आर. की विभिन्न सेवा बस्तियों में प्रतिदिन हो रहे यज्ञ-संस्कारों के आयोजन

दिल्ली सभा द्वारा घर घर यज्ञ, हर घर यज्ञ की योजना निरंतर गतिशील है। इसके लिए सभा की एक युवा विद्वानों, कार्यकर्ताओं की पूरी टीम समर्पित भाव से निरन्तर इस सेवाकार्य में संलग्न है। जहां एक तरफ सभा के ये संवर्धक दिल्ली की कालोनियों में, शिक्षण संस्थानों में, घर परिवारों में यज्ञ करा रहे हैं वहीं उन सेवा बस्तियों में वेदमन्त्रों का उच्चारण हो रहा है, हवन ओर संस्कारो से परिचित कराता है, उन्हें दुर्गुण दुर्व्यसनों से बचने का संदेश देता है। परिणामस्वरूप वहां के युवाओं में वैदिक संस्कारों का बीजारोपण सम्भव हो रहा है, वे नशा करने की आदत छोड़ रहे हैं, देश, धर्म, सँस्कृति के प्रति जागरूक हो रहे हैं, अपने बड़े बुजुर्गों के प्रति सम्मान करने लगे हैं, गायत्री मंत्र और यज्ञ प्रार्थना सीख गए हैं। यज्ञ का प्रचार बढ़ रहा है, वे स्वयं यज्ञ कराने के

की सुगंध फैल रही है जहां बहुत से लोग जाने में भी परहेज करते हैं। वहां दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा लगातार उन सभी लोगों के घर परिवारों में नामकरण, जन्मदिन, विवाह, विवाह की वर्षगांठ, शान्ति यज्ञ, प्रार्थना सभा आदि करा रही है, जिन्हें सभ्य समाज निर्धन बस्ती, जे. जे. कालोनी आदि नामों उपेक्षा के भाव से पुकारता है। आर्य समाज उन्हें सेवा बस्ती कहता है, वहां पर रहने वालों को अपना भाई, बहन, बेटी के रूप में मानता है, उनके यहां हवन कराता है, सत्संग करता है, उन्हें जीवन जीने की कला सिखाता है, उन्हें वैदिक धर्म, सँस्कृति लिए फोन करने लगे हैं। ईश्वर की कृपा और सभी आर्यजनों के सहयोग से घर घर यज्ञ,हर घर यज्ञ की योजना फलीभूत हो रही है, इसे और आगे बढ़ाना है, हर घर तक पहुंचाना है।

आइए, सभा की इस कल्याणकारी योजना में सहभागी बनें, इन सेवा बस्तियों में यज्ञ करना कराना एक तरह से पूरी तरह परोपकार ही है। इसमें घी, सामग्री, समिधा, यज्ञपात्र, दरी, माइक और यज्ञ के ब्रह्मा आदि विद्वान, भजनोपदेशक आदि की व्यवस्था में सहयोग देने हेतु अथवा यज्ञ के आयोजन हेतु सम्पर्क करें। 9650183335

मकर संक्रान्ति (15 जनवरी) पर विशेष

सर्वदेशी वैदिक पर्व है -मकर सौर संक्रान्ति

जितने समय में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है उसको एक "सौर वर्ष'' कहते हैं और कुछ लम्बी वर्तुलाकार जिस परिधि पर पृथ्वी परिभ्रमण करती है, उसको "क्रान्तिवृत्त" कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के 12 भाग कल्पित किए हुए हैं और उन 12 भागों के नाम उन उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र पुंजो से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती जुलती आकृति के नाम पर रख लिए गए है। यथा-1.मेष 2.वृष 3.मिथुन 4.कर्क 5.सिह 6.कन्या 7.तुला 8.वृश्चिक 9.धनु 10.मकर 11.कुम्भ 12.मीन। प्रत्येक भाग वा आकृति "राशि" कहलाती है। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तो उसको "संक्रान्ति" कहते हैं। लोक में उपचार से पृथ्वी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। छः मास तक सूर्य संक्रान्ति क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदित होता रहता है और छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है प्रत्येक 6 मास की अवधि का नाम 'अयन' है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को उत्तरायण और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायण' कहते हैं। उत्तरायण काल सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दिखता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय में सूर्य दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है और उसमें रात्रि बढ़ती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्कसंक्रान्ति से दक्षिणायण प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाश आधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्वशाली माना जाता है अतीव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर की संक्रान्ति को भी अधिक महत्व दिया जाता है और स्मरणातीत चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है। यद्यपि इस समय उत्तरायण परिवर्तन ठीक ठीक मकर संक्रान्ति पर नहीं होता और अयन चयन की गति बराबर पिछली ओर को होते रहने के कारण इस समय (संवत 1995 वि. में) मकर संक्रान्ति से 22 दिन पूर्व धनुराशि के 7 अंश 24 कला पर "उत्तरायण" होता है। इस परिवर्तन को लगभग 1350 वर्ष लगे हैं परन्तु पर्व मकर संक्रान्ति के दिन ही होता चला आ रहा है इससे सर्वसाधारण की ज्योतिष-शास्त्रानभिज्ञता का कुछ परिचय मिलता है, किन्तु शायद पर्व चलते न रहना अनुचित मानकर मकर संक्रान्ति के दिन ही मनाने की रीति चली आती हो। मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है।

सर्दी का बढ़ता प्रकोप चहुं ओर जनावास, जंगल, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक छा रहा है, चराचर जगत शीतराज का लोहा मान रहा है, हाथ पैर से सिकुड़ रहे हैं, दिन की अवस्था यह हो गई है कि बच्चे, बुजुर्ग, जीव-जन्तु सब बेहाल हो जाते हैं। सूर्यदेव उदय होते ही अस्ताचल के गमन की तैयारियाँ आरम्भ कर देते हैं, मानो दिन रात्रि में लीन हुआ जाता था। रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपनी देह बढ़ाती ही चली जाती है। अन्त को उसका भी अन्त आया। मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया। आज सूर्यदेव ने उत्तरायण में प्रवेश किया। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रंथ से विशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रंथों में उसको 'देवयान' कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने उनकी आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन पर शर-शैय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्तियाँ किसी पर्वता (पर्व बनने) से कैसे वंचित रह सकता था। आर्य जाति के महापुरुषों ने मकर-संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण संक्रमण तिथि) का पर्व निर्धारित कर दिया। जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है यह पर्व बहुत चिरकाल से चला आता है। यह भारत के सब प्रांतों में प्रचलित है अत: इसको एकदेशी न कहकर सर्वदेशी कहना चाहिए। सब प्रांतों में इसके मनाने की परिपाटी में भी समानता पाई जाती है। सर्वत्र सर्दी के निवारण के उपचार प्रचलित हैं। वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तेल, तूल (रूई) बतलाए हैं। जिसमें तिल सबसे मुख्य है। इसलिए पुराणों में इस पर्व के सब कृत्यों में तिलों के प्रयोग का विशेष माहात्म्य गाया गया है। किसी पुराण का निम्नलिखित वचन प्रसिद्ध है-

तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी।
तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला: पापनाशना:॥

अर्थ- तिलमिश्रित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन, तिल का जल, तिल का भोजन और तिल का दान ये छः तिल के प्रयोग पापनाशक हैं।

मकर संक्रान्ति के दिन भारत में सब प्रांतों में तिल और गुड या खाँड़ के लडडू बनाकर जिनको 'तिलवे कहते हैं, दान दिए जाते हैं और इष्ट मित्रों में बाटे जाते है। महाराष्ट्र प्रात में इस दिन तिलों का 'तीलगूल' नामक हलुआ बाटनें की प्रथा है और सौभाग्यवती स्त्रियाँ तथा कन्यायें अपनी सखी सहेलियों से मिलकर उनको हल्दी, रोली, तिल और गुड भेंट करती हैं। प्राचीन ग्रीक लोग भी वधु-वर को सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पकवान बाटते थे। इससे ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर और शहद अपने इष्ट मित्रों को भेंट करने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व की सार्वत्रिकता और प्राचीनता का परिचायक है। मकर संक्रान्ति पर्व पर दीनों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृत दान करने की प्रथा सनातनियो में प्रचलित है। "कम्बलवन्तं न बाध ते शीतम" की श्लिष्ट उक्ति संस्कृत में प्रसिद्ध ही है। घृत को भी वैद्यक में ओज और तेज को बढ़ाने वाला तथा अग्निदीपक कहा गया है। आर्य पर्वों पर दान, जो धर्म एक स्कन्ध है, अवश्यमेव ही कर्तव्य है-

देशे काले च पात्रे च
तद्दानं सात्विकं स्मृतम।

गीता, अध्याय 17, श्लोक 20

अर्थ- देश, काल और पात्र के अनुसार ही दिया हुआ दान 'सात्विक' कहलाता है। इस प्रबल शीतकाल में मकर संक्रान्ति के पहले दिन लोढ़ी का त्योहार मनाने की रीति है। इस अवसर पर स्थान स्थान पर होली के समान अग्नियॉ प्रज्वलित की जाती हैं और उनमें तपे हुए गन्ने भूमि पर पटकाकर आनन्द मनाया जाता है। उससे अगले दिन वहॉ मकर संक्रान्ति का भी उत्सव होता है, जिसको वहॉ 'माघी' बोलते है। ज्ञात होता है कि ये दोनों दिन के लगातार दो उत्सव न होकर दिनद्वयव्यापी मकर संक्रान्ति महोत्सव के एक ही पर्व का अपभ्रंश रूप है। देश के आर्य सामाजिक पुरूषों को चाहिए कि वे दो दिन त्योहार न मनाकर मकर संक्रान्ति की तिथि को ही परिमार्जित रूप में इस पर्व को मनाए और आर्यसामाजिक जगत् में पर्वों की एकाकारता स्थापित करने में सहायक हों।

-आर्य पर्व पद्धति से साभार

> **"आर्य पर्वों की वृहद श्रंखला में मकर संक्रान्ति पर्व का अपना प्रमुख स्थान है। इस दिन आर्य पर्व पद्धति के अनुसार सामान्य हवन के साथ ही तिल और गुड़ से बने साकल्य की आहुति हेमन्त और शिशिर ऋतुओं की वर्णन परक यर्जुवेद की ऋचाओं से देने का विधान है। इस अवसर पर निर्धन लोगों को तिल के बने लडडू, मूंगफली, रेवडी, गर्म वस्त्र, कम्बल आदि दान देने की भी प्राचीन परंपरा है।"**

उत्तर अयन इसी तिथि को है, सविता का सुप्रवेश हुआ ।
मान दिवस का इस ही कारण, अब से है सविशेष हुआ ।
वेदप्रदर्शित देवयान का, जगती में विस्तार हुआ ।
उत्सव संक्रान्ति, मकर की का, जनता में सुप्रसार हुआ ॥ 1 ॥
तिल के मोदक, खिचड़ी, कम्बल, आज दान में देते हैं ।
दीनों का दु:ख दूर भगाकर, उनकी आशिष लेते हैं ।
सतिल सुगन्धित सुसाकल्य से होम यज्ञ भी करते हैं ।
हिम से आवृत नभमण्डल को शुद्ध वायु से भरते हैं ॥ 2 ॥

-कविरत्न पं. सिद्धगोपाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मानवमात्र की सहायतार्थ तैयार किए गए मोबाइल एप्प

आर्यजनों से निवेदन है कि इन्हें अपने मोबाइल में डाउनलोड करें और प्रचार में सहयोगी बनें

What the Vedas Stand for

Continuing the last issue

(3) Veda is Divine and Scripture of Truth

The Vedas lay unqualifed emphasis on the acceptance of their being of the Divine origin in the usual course of His dispensation of things in keeping with His plan of Rit (Rigved) or Ridh (Atharvaved) for creation, sustenance and dissolution of the universe and its activities—Rigved, 10. 55. 5, 10. 90. 9; Yajurved, 2. 21, 31. 7; Samaved, 1. 4 (1). 4. 3, 2. 9 (1). 7. 1; Atharvaved, 9. 10. 9, 10, 7. 20, 10. 8. 32. They further declare themselves to be the seriptures of truth, worthwhile being followed by men and women for all that concerns them : "Tah vadanti yathayatham" ('The Vedas propound unallied truth')—Atharvaved 10. 8. 33; "Satyo mantrah" ('The Vedic verses are truthful')—Rigved, 1. 152. 2. They also state that the Vedic teachings should form part and parcel of the people and that they should, never, be transgressed—Atharvaved, 1. 1. 2-4. Of course, the Atharvaved (16. 8. 1-33; 19. 71. 1) makes it plain that it is through the Vedas that we can secure all things for us, both spiritual and temporal.

(4) Equality of Man an d Position According to Work

Univocally do the Vedas give a clarion call to mankind that there is no innate distinction between man and man and man and woman according to the laws of nature, all being born in one and the same way, all enjoying the bounties of nature withont any discrimination and all deadbodies being obliged to be disposed of after death. The facts of birth, existence and death, thus, level all and univocally establish a natural brotherhood of man with the fatherhood of the Creator, Sustainer and Disintegrator of the entire universe in all its bearings. It's, acc)rding to the Vedas, anti-Divine to advocate and practise any sort of distintion or discrimination between human beings, all being glorious children of the Common Father, Who enjoins equality of man and man and man and woman, irrespetive of class, colour, race or creed at all levels. The Vedas consequently, deprecate all notions of uneqttility in all forms like the prevalent eastern caste system and the western class system. They go all out to advo cate a classless and casteless society, throwing all opportunities equally to one and all, who, according to their acquired qualities and nature or aptitude, should be allowed to push ahead with their work, giving them their living and determining their station in life, which is, of course, open to any change at their will and attendant circumstances. The Rigved (10. 90. 12), the Yajurved (31. 11) and the Atharvaved, (19. 6. 6) make it plain that according to their modes of living, they may become Brahmans .,miListers), Kshatriyas (militiamen, policemen and administrators), Vaishyas (producers) and Shudras (manual workers), none of which is derogatory anyway. As a matter of fact, chapter 30, verses 5 to 22 of the Yajurved give the detailed way of stationing people in life according to their ways of living.

(5) Work, Behaviour and Arya and Anarya and Aryanisation

The dignity of work and the proper human course of conduct and behaviour in an overall structure of society and the Divine order of things, securing happiness and all round prosperity and individual and collective security, integrity and independence at usually recognised or recogniseable levels according to the conscience of average persons, shorn of all prejudices, are also dealt at length in the Vedas. Inactivity, hooliganism, erraticism and confusion are discouraged in the Vedas all over. They pronounee definitely that action is superior to so called destiny, for which we have no yardstick. In reality, as Swami Dayanand puts it (No. 25 of his Statement of beliefs at the end of the Light of Truth) 'the former begets the latter, and if the former be well-directed, all ends well, and if it be misdirected, all goes wrong'.

"Manur-bhava" or 'be a proper man', following a via media between rank materialism or rabid leftism and ultra spiritualism or extreme rightism is the Vedic dictum: Rigved, 10. 9.4; Yajurved, 36. 12; Samaved, 1. 1 (1). 3. 13; Atharvaved, 1. 6. 1

Keep to righteousness, doing things after due reflection over right and wrong, and deal with all in keeping with love, law and propriety seems to be the sum total of all that is uttered in the Vedas about the proper human course of conduct and behaviour. The whole of the Yajurved, the Veda of action, is replete with the same in various contexts. Swami Dayanand's Ten Ordinances, culled out from the four Vedas and promulgated as the Ten Rules of Aryasamaj, the Vedic Mission, have it as the 5th and the 7th rules.

The Vedas don't confine themselves to utopianism, and coming down to the practical aspect of man's conduct and. behaviour, they classify the cultured or civilised people under two broad heads of Arya or Aryan and Anarya, non-Aryan orno-Aryan, Deva and Adeva, Deva and Asur, Sur and Asur, Arya and Das, Arya and Martya, Deva and Martya or Manushya, Dwij and Adwij, Deva and Marta, and the like :

To be continued in next issue

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

उपमान-शब्द-ऐतिह्य-अर्थापत्ति

88-उपमान

जिसके सब सादृश्य
का उपमा से हो ज्ञान ।
'नीलगाय का गाय से'
जिससे वह 'उपमान' ।।109।।

89-शब्द

पूर्ण आप्त, परमेश या
आप्तों के उपदेश ।
वे ही 'शब्द' प्रमाण हैं,
कहते सभी बुधेश ।।110।।

90-ऐतिह्य

हो न असम्भव झूठ जो,
शब्द प्रमाण-समान ।
'ऐसा ही निश्चित रहा'
वह 'ऐतिह्य' प्रमाण ।।111।।

91-अर्थापत्ति

एक बात के कथन से
बिना-कथन-उत्पत्ति ।
हो द्वितीय की मानिए,
उसको 'अर्थापत्ति' ।।112।।

साभार :

सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

अभाव से भाव असम्भव

15-12-1916 ई. के शास्त्रार्थ की चर्चा इससे पूर्व की जा चुकी है। इस शास्त्रार्थ में पं. रामचन्द्रजी देहलवी ने यह प्रश्न उठाया कि अभाव से भाव नहीं हो सकता। इस्लाम वाले यही मानते हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व केवल अल्लाह ही था। उसने अपनी शक्ति से अभाव से सब-कुछ उत्पन्न कर दिया।

पण्डित श्री रामचन्द्रजी ने अपने विपक्षी मौलवियों से कहा आप एक तो ऐसा दृष्टान्त दो कि जिससे यह सिद्ध हो कि अभाव से भाव सम्भव है। इसपर मौलवी मुहम्मद सईद साहब ने कहा, ''आप दूसरा खुदा दीजिए, मैं नेस्ती (अभाव) से हस्ती (भाव) की मिसाल (उदाहरण) ला दूँगा।''

पण्डित श्री रामचन्द्रजी ने अपने तार्किक मधुर स्वभाव में इसका जो उत्तर दिया वह स्वरणीय है। आपने कहा कि आपका यह कहना कि मैं दूसरा खुदा ढूँढ लाऊँ तो आप अभाव से भाव बता देंगे। इसका क्या अर्थ है? यही ना कि अभाव से भाव का होना ऐसा ही असम्भव है जैसा कि दूसरे सृष्टिकर्ता को सत्ता में लाना या बनाना। पण्डितजी ने कहा कि मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि जैसे दूसरा ईश्वर नहीं ला सकते, वैसे ही अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

युवा पाठक प्रश्न से अनुमान लगाएँ कि देहलवीजी कितने बड़े तार्किक थे। विपक्षी के शब्दों से ही उसे उत्तर दे देने की उनमें क्षमता व योग्यता थी।

-प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

पृष्ठ 2 का शेष

पादरियों ने ऐसे भगाया कोरोना

को मंच पर लाकर यह कहलवाया गया की वे अपंग थे। अभी प्रार्थना के चमत्कार से ठीक हो गए हैं। यह सब अखबारों में छपा था, जबकि उसी दौरान जबलपुर में ऐसी ही एक सभा में चमत्कार से स्वस्थ होने की उम्मीद से पहुंचे कुछ मरीजों की ठण्ड लगकर मृत्यु होने की खबर भी अखबारों में प्रकाशित हुई थी।

सब जानते हैं हर किसी के मूल में दु:ख है, ऐसा कोई नहीं जो बीमार न होता हो, भारत जैसे देश की जनता आज भी चमत्कारों पर विश्वास करती है। दूसरा देश में अभी अस्पतालों की बड़ी कमी है, ग्रामीण आंचलो में एक तो अनेकों जगह दूर-दूर तक अस्पताल नहीं इस कारण भी अनेकों लोग चंगाई जैसी सभाओं में यह सोचकर चले जाते है कि क्या पता कोई जादू हो जाये। इसी जादू की लालसा में पिछले दिनों जिला रायडीह प्रखंड के तुलमुंगा गांव में एक गरीब और बीमार गर्भवती महिला पूनम को मिशनरियों के चंगाई सभा में ठीक करवाने के लिए ले जाया गया था। चंगाई सभा में चंगा होने की जगह महिला की हालत खराब हुई और उसकी मौत हो गयी थी। लेकिन मिशनरियों का नंगा खेल ये सर्कस देश के कई राज्यों में जारी है। विडम्बना इस बात की है कई पास्टरों, पादरियों की हाल की गिरफ्तारियों के बाद भी चंगाई सभा बेरोकटोक जारी है। जबकि लोगों और सरकारों को इससे उसी तरह से लड़ना चाहिए जैसे किसी संगठित अपराध के खिलाफ लड़ते हैं। क्योंकि चंगाई सभा भी गरीब लोगों को बेवकूफ बनाने और उनका धर्मांतरण करने का एक सफल और विशाल बाजार बन चूका है।

बाइबल में बताया जाता है जो जीसस पर विश्वास करता है वो मरता नहीं, दूसरा जो जीसस पर विश्वास करता है वो पानी पर चलने लगता है। अब जीसस तो इस दुनिया में नहीं हैं क्यों? शायद खुद पर विश्वास नहीं करते होंगे! अगर करते तो आज जिन्दा होते अकार्डिग टू बाइबल। इसके अलावा अब रही बहते पानी पर चलने की बात, तो क्या कारण है आज तक वेटिकन में करीब 263 पॉप और दुनिया में करोड़ो बिशप पादरी और नन हुए लेकिन एक भी पानी पर नहीं चला? बहता हुआ पानी भी छोड़ दीजिये एक तसला पानी का भरकर उसमें ही खड़ा होकर दिखा देते तो लोग मान लेते कि हाँ इनका जीसस पर विश्वास है। लेकिन बाइबल की कहानियाँ हैं किस्से हैं वही रटाये जा रहे हैं। जीसस पर विश्वास से एक बात और याद आई कि ये 263 पॉप क्यों मरे? क्या इनका भी जीसस पर विश्वास नहीं था? ये तो जीसस के उत्तराधिकारी माने जाते हैं।

शायद यही कारण है कि कई रोज पहले छतीसगढ़ के कोंडागाँव ज़िले में स्थानीय आदिवासियों को गुस्सा आया और चर्च के नाम पर उनकी जमीन पर हो रहे कब्जे को लेकर उनमें रोष था। उन्होंने अनेकों गाँवो में उन सबको पीटा जो ईसा मसीह को मानते थे। सब अपनी जान बचा कर गाँव की सरहद से दूर भागते रहे, भागते रहे। वो तब तक उनका पीछा करते रहे, जब तक लोग उनकी नज़रों से ओझल नहीं हो गए। लगभग 33 गाँवों के लोगों ने अलग-अलग सामुदायिक भवन, चर्च, प्रार्थना घर और खेल स्टेडियम में शरण ले रखी है। पीड़ित लोगों का आरोप है कि ईसाई धर्म से नाराज़ कई गाँवों के लोगों ने संगठित हो कर हमला किया। कहीं मारपीट की गई, कहीं घरों में तोड़फोड़ की गई। कहीं प्रार्थना घर तोड़ दिया गया तो कहीं ईसाई धर्म को मानने वालों को गाँवों से ही निकाल दिया गया।

कुछ भी हो जहाँ एक तरफ इनका पाखंड चालू है तो दूसरी तरफ आम लोग इनका सर्कस समझ गये, वो जाग गये हैं जो अब इनसे सवाल करने लगे हैं। शायद ये संख्या आगे इतनी बढ़ जाये कि पादरी ही खुद जीसस पर सवाल खड़े करने लगे कि ये कैसा अंधविश्वास है? **-संपादक**

पृष्ठ 1 का शेष

का गुणगान करने पर हम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य संदेश परिवार की ओर से माननीय प्रधानमंत्री जी का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं और उनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की ईश्वर से मंगल कामना और प्रार्थना करते हैं। **-संपादक**

वैदिक सूक्तियां

9- गौ-शाला में-

दोग्ध्री धेनु: -यजु० 22-22

(दुधारू गौवे हों।)

10- दान हेतु-

शतहस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर -यजु०

(सौ हांथो से कमाओ और हजार हांथो से बिखेर दो।)

11- फैक्ट्री-कर्मचारियों के लिए

पुरुष वाव यज्ञ: -छान्दोग्योपनिषद

(शुभ कर्म फल प्राप्ति हेतु निरंतर कर्तव्य कर्म कर।)

12- सत्संग भवन में-

सत्यान्न वद -तैतरीय०

(सदा सत्य बोलो।)

आप्तोपदेश: शब्द:

-न्याय दर्शन -01-01-07

(धार्मिक विद्वान पुरुषों के वचनों को पालन कर।)

ये के चास्माच्छ्रेयांसो ब्राह्मणस्तेषा त्व्यासनेन -तैत्तरीय०

(जो कोई हमारे बीच में उत्तम विद्वान धर्मात्मा ब्राह्मण है उन्ही के पास बैठ।)

पृष्ठ 1 का शेष

उन्होंने अपनी शिक्षा दीक्षा और संस्कार का आधार महर्षि दयानंद सरस्वती को बताया। श्री विनय आर्य जी ने बंगाल के गांव और शहरों में प्रचार का माध्यम वैदिक साहित्य को बताया और कहा कि वैदिक साहित्य के निशुल्क वितरण से ही आर्य समाज का प्रचार प्रसार संभव होगा। सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी ने कहा कि वैदिक ज्ञान ही मनुष्य के शांति का आधार है। आज के समय में वर्तमान शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता है। समारोह में प्रो. उमाकांत उपाध्याय द्वारा लिखित पुस्तक महर्षि वचन सुधा और डॉ ज्वलंत कुमार द्वारा 4 पुस्तक, पंडित चमूपति और डा. भवानीलाल भारतीय की बंगला भाषा में पुस्तकों का विमोचन हुआ। समापन समारोह में गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी उपस्थित हुए, उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती को श्रद्धांजलि देते हुए अपना उद्बोधन में कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा राष्ट्रीय समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है। हमें अपने बच्चों को गुरुकुल में भेजना चाहिए, जिससे वें संस्कारवान हो और नित निरंतर उन्नति प्रगति और सफलता को प्राप्त करें। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने संगठन की एकता पर बल दिया। सभी विद्वानों को स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया गया। मंत्री श्री दीपक जी ने सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए सभी विशिष्ट अतिथि, संन्यासी, विद्वान एवं प्रतिभागियों और आगंतुकों का धन्यवाद किया। **-मंत्री**

शोक समाचार

श्री किशन लाल गुप्ता जी का निधन

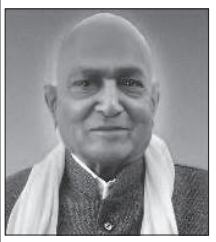

आर्य समाज पंचदीप के महामंत्री श्री मनोहर लाल गुप्ता जी के पूज्य पिता एवं श्री आनन्द प्रकाश जी के भाई साहब श्री किशन लाल गुप्ता जी का 95 वर्ष की अवस्था में 30 दिसम्बर 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया और उनकी श्रद्धांजलि सभा 8 जनवरी, 2023 को अग्रसेन भवन पीतमपुरा में सम्पन्न हुई। जिसमें दिल्ली सभा के अधिकारियों सहित क्षेत्रीय आर्यजनों ने श्रद्धांजलि दी।

श्रीमती जयदेवी जी का निधन

आर्य समाज के मंत्री श्री भूदेव आर्य जी की धर्मपत्नी श्री जयदेवी जी का 3 जनवरी 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 13 जनवरी को आर्य समाज मन्दिर अशोक विहार फेज-3 में आयोजित होगी।

श्रीमती सुनेहरी देवी जी का निधन

आर्य समाज घरौंडा के पूर्व मंत्री आर्य दिलबाग लाठर की पूज्या माता श्रीमती सुनेहरी देवी जी का 29 दिसम्बर 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 8 जनवरी 2023 को गुरुब्रह्मानन्द आश्रम डिंगर माजरा घरौंडा में संपन्न हुई।

ज्योति कुकरेजा जी का निधन

आर्य समाज एल. ब्लाक हरिनगर की वरिष्ठ सदस्या एवं पूर्व उपमंत्री श्रीमती निर्मल कुकरेजा जी की सुपुत्री ज्योति कुकरेजा का 54 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। उनका अन्तिम पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। जिसमें आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

MDH हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो 10 एवं 20 किलो की पैकिंग

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

सोमवार 09 जनवरी, 2023 से रविवार 15 जनवरी, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 11-12-13 जनवरी, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 11 जनवरी, 2023

आर्य समाजों की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित रजिस्टर उपलब्ध हैं

- आर्य समाज सदस्यता रजिस्टर
- आर्य समाज सदस्यता शुल्क (चन्दा) रजिस्टर
- भवन आरक्षण रजिस्टर
- आर्य वीर दल रजिस्टर
- आर्य वीरांगना दल रजिस्टर
- संस्कार (पुरोहित रजिस्टर)
- आर्य युवा महिला मिलन सदस्यता रजिस्टर
- आर्य बाल वाटिका रजिस्टर
- आर्य कुमार सभा रजिस्टर
- रसीद बुक रजिस्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

विवाह इत्यादि शुभ अवसरों पर
वैदिक मंत्रों के साथ शुभकामनाएं देने के लिए

शगुन लिफाफे
ऑनलाइन खरीदें
vedicprakashan.com
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह